धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

नवम्बर 2008

महोत्सव मुबारक

परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है

एकता में ही शान्ति का समन्वय है।

गुणों पर अवगुण भारी

स्वार्थ का महा नीच अनुराग

शुभ संग्राम

महोत्सव मुबारक

पाठक गण! हम सब के लिए यह हर्ष का विषय है कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा, बानी देव धर्म का 158 वाँ मुबारक शुभ जन्म महोत्सव निकट आ रहा है! इस वर्ष 11, 12, 13 और 14 दिसम्बर 2008 (वीरवार, शुक्रवार, शनिवार और रविवार) को पूरी धूम-धाम और उल्लास पूर्ण ढंग से मनाया जाएगा। सेवक सेवका व पाठक गण इसके लिए अभी तारीखें याद रखकर अपनी छुट्टी का प्रबन्ध कर लें।

वैसे तो महोत्सव का प्रोग्राम और निमंत्रण पत्र भी भेजे जाएंगे, परन्तु अभी से इस शुभ पर्व को याद करके अपने दिलों को तैयार कर लें।

दिसम्बर का अंक प्रत्येक वर्ष की तरह गुरु महाराज को मुख्य रखकर देवात्मा अंक छापा जाएगा। इसमें देवात्मा की अद्वितीय विशेषताओं को अपनी योग्यता अनुसार पाठक गण के सामने प्रस्तुत करेंगे। उनके जीवन सम्बन्धी देव लक्ष्य, उनकी विज्ञान मूलक शिक्षा, उनके अद्वितीय कारज सम्बन्धी ज्योति से भरपूर लेख होंगे। उनका विचारपूर्वक पाठ हम सबके लिए बहुत लाभकारी हो सकता है।

अभी से महोत्सव पर स्वयं आने वा अपने सगे सम्बन्धियों को साथ लाने की तैयारी आरम्भ कर दें। अभी से यदि आप प्रेरणा करते रहेंगे और यदि आप इसमें सफल होते हैं, तो पता नहीं किसी जन को कितना लाभ पहुँच जाए, इस द्वारा आप मिशन की सेवा कर सकते हैं।

अपना घर छोड़ने में बहुत सी रुकावटें वा दिक्कतें आती हैं और आएंगी, परन्तु उन्हें परास्त करके अपने भले के लिए यह संग्राम करें और अवश्य पहुँचे।

दूर-दूर से आए हुए साथी सेवकों से मिलने का सौभाग्य मिलेगा, कितना चाव भरा यह समागम होगा, यह सब आपके सहयोग से ही सम्भव है।

महोत्सव के प्रोग्राम की सभाओं की अलग विशेषता होती है। महोत्सव की ही सभाओं ने हम सब में से कितनों की जिन्दगियां बदली हैं, कितनों के घरों में स्वर्ग आया है, कितनों के पाप और मिथ्या गए हैं। प्रवेश सभा रोशनी भरपूर होती है, जो लाभ उठाने के लिए प्रेरणा देती है, उससे वंचित नहीं रहना चाहिए। सारे वर्ष में अपने बचावनहार सत्गुरु के लिए चार दिनों की कुर्बानी, कोई कुर्बानी नहीं, उलटा गुरु के उपकारों की लड़ी और बढ़ जाएगी। महोत्सव में शामिल होना हमारी प्रतिज्ञा में भी शामिल है।

हमारी दिली कामना है कि आप अधिक से अधिक संख्या में पधार कर लाभ उठाएं।

आप सबको सत्य देव की जय।

आपका साथी सेवक

बलदेव सिंह

धर्म जीवन

खण्ड 20 अंक 11

नवम्बर 2008

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है

मनुष्य का नीच जीवन अन्धेरा पैदा करता है। इसलिए साधारण हृदय अन्धेरे में ही ग्रस्त रहते हैं। अन्धेरे के कारण मनुष्य उच्च, कीमती और महान सचाईयों को देख नहीं सकता। जैसे कौओं को हंसों की बोली समझ नहीं आती, उसी प्रकार मनुष्य को महान मनुष्यों द्वारा बताई हुई सच्चाईयां वा बोली समझ नहीं आती। देवात्मा द्वारा बताई हुई सच्चाईयां तो मनुष्य के हृदय में उतरनी और भी कठिन हैं।

"परोपकार के बिना, ज़िन्दगी मौत है", यह एक अति महान जीवन तत्त्व है। यह बहुमूल्य सचाई स्वार्थी मनुष्य को समझ नहीं आ सकती। इसलिए साधारणत: मनुष्य इन सच्चाईयों से न के बराबर ही लाभ उठाता है।

"परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है", यह शब्द परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी की याद में बने कर्मचारी निवास के उद्घाटन के समय लाहौर के भीतर फरमाए थे। उन्होंने कुछ इस तरह फरमाया था कि "गाफिल मत रह" नामक लेख को पढ़कर श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के सामने यह आया था कि मैं कहां पड़ा हुआ हूँ। जो वस्तुएं मेरे साथ नहीं जा सकतीं, तो वह मेरी कहां हैं? मनुष्य के अस्तित्व में आत्मा ही सार वस्तु है, पूजनीय भगवान की रोशनी में यह सचाई नज़र आई। उनके सामने यह हकीकत खुली कि दुनिया की सब वस्तुएं असार हैं। श्रद्धेय श्रीमान जी के हृदय की यह विशेषता थी कि उनके अन्दर यह ज्योति प्रवेश कर गई जो आत्मा के तत्व दिखा सकती है। वहां आकर उनके भीतर देव तेज के प्रवेश से यह तत्व और भी साफ हो गया कि परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है। उन्हें यह भी तत्व नज़र आया कि ज़िन्दगी परोपकार से ही बनती है। उनके भीतर हलचल पैदा हो गई।..... आत्महित के लिए जब इच्छा जागी तो दूसरों के लिए परोपकार का काम शुरू हो गया। यह आला ज़िन्दगी की आरम्भिक अवस्था है।

"परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है" यह महान सचाई है, जो साधारणत: मनुष्य को सारी उमर नज़र नहीं आती। यह सचाई देवात्मा की रोशनी में श्रद्धेया जी को नज़र आई और सदा के लिए उनके हृदय में उतर गई। इस सचाई को देखने के बाद श्रद्धेया जी का जीवन मार्ग करोड़ों अरबों मनुष्यों के मार्ग से बिल्कुल अलग और निराला हो गया, जिन्हें यह सचाई बिल्कुल नज़र नहीं आई।

इस सचाई को हृदय से ग्रहण करने से श्रद्धेया जी के लिए इस संसार के सुख, स्वाद, पदार्थ और सम्बन्धी सब फीके पड़ गए। वह विशुद्ध परोपकार में लीन हो गईं। फिर उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

साधारण मनुष्य इस धरती पर जन्म लेकर जब होश सम्भालता है तो उसकी सुख अनुरागी प्रकृति को सुखदायक सम्बन्धी और सुख दायक पदार्थ मिलते हैं, और वह बहुत अच्छे और प्यारे लगते हैं और स्वभाविक रूप से मनुष्य उनके साथ चिपटता जाता है। और अपने नीच सुख को तृप्त करता जाता है। ऐसे जनों का जीवन लक्ष्य वा जीवन मन्त्र यह बन जाता है, खाओ, पीओ और मौज (Eat, Drink & Be Merry) करो। अधिक से अधिक सुख देने वाले सम्बन्धी वा सामान इकट्ठे करो। यही जीवन है। ऐसे दुनयवी सामानों के कीड़े बनकर सारी उमर जीवन की बहुमूल्य सचाई को देख नहीं सकते कि परोपकार के बिना जीना मौत है और न ही इससे यथेष्ट लाभ उठा सकते हैं। जितना भी कोई सांसारिक पदार्थों का कीड़ा बन जाता है, उतना ही उसका आत्मा अन्धकार से भर जाता है और उक्त सचाई से दूर और दूर होता जाता है।

देव समाज के सेवक और सेवकाओं को और कर्मचारी जनों को भी यह सचाई प्राय: नज़र नहीं आती और वह इस सचाई की रोशनी में न केवल जीना आरम्भ नहीं करते बल्कि हृदय के अन्धेरे के कारण, अपने सुखों, स्वादों की बहुत ही ज़ोरदार चाट के कारण उन्हीं सुखो ं और सामानों में मस्त रहते हैं। ऐसे जीवन को ही ठीक व ज्योति भरपूर समझते रहते हैं। और इसी खुशफहमी में सारी उमर गुज़ार देते हैं।

साधारणत: इन्सानी बच्चे स्वाद भरे खानों के दीवाने, फैशन भरी नित बदलती पोशाकों के दीवाने, निज दिखावे के दीवाने और अच्छी कारों, कोठियों के दीवाने, फिल्मों वा ऐक्टर ऐक्ट्रसों के दीवाने, होटलों, क्लबों और पार्टियों वा डान्स डिस्को के दीवाने बन रहे हैं। इसी को वह शानदार ज़िन्दगी देखते वा महसूस करते हैं। ऐसे दीवाने कभी इस बहुमूल्य जीवन की सचाई को देख नहीं सकते, उससे लाभ तो क्या उठाना था। इस प्रकार अन्धकार बढ़ता जाता है, जैसे-जैसे उक्त सुख स्वादों की चाट बढ़ती जाती है। उक्त पदार्थों के लिए दिवानगी मनुष्य के पास कुछ समय ही नहीं रहने देती कि जिसमें मनुष्य कोई ऊँचे दर्जे की सोच रख सके। मनुष्य को दिखावे की सरगर्मियों और तैयारियों से ही समय नहीं बचता।

एक या दूसरा व्यसन, नशे, मांसाहार, शिकार, जुए, लिंग तृप्ति के जान लेवा इश्क ही मनुष्य को अन्धा बनाए रखते हैं, कोई ऊँची सोच के योग्य ही रहने नहीं देते। परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है, किन पागलों की बोली है, वह समझ नहीं सकते।

धन, धरती और पदार्थ भी मनुष्य प्रकृति के लिए बहुत स्वाद-दायक वा मीठे लगते हैं। लगभग सारा संसार ही इस मीठे कोढ़ की झलक पर मोहित हुआ है। कीड़ियों की तरह अरबों मनुष्य, कोई सोच विचार के बिना इन्हीं की तृप्ति में ज़ोर शोर से मग्न वा मस्त वा लट्टू होते जाते हैं। अरबों मनुष्यों के जीवन का लक्ष्य ही धन धरती और पदार्थों की प्राप्ति बन जाता है। कोई उच्च काम नहीं कर सकते, अपने स्वार्थ से परे सोचना उनके आत्मिक अन्धकार के कारण सम्भव ही नहीं। धन की प्राप्ति उनके भीतर खुशी संचार करती है। धन का वियोग बहुत घातक वा दिल तोड़ने वाला बन जाता है। परोपकार उन्हें पागलों का काम दिखाई देने लगता है। मदर टेरेसा को शायद किसी जन ने रायल रौयस कार भेंट की। उसमें उन्होंने बैठकर भी नहीं देखा, उसको झट नीलाम करके सेवा

में पैसा लगा दिया।

मान, इज्ज़त, पद, प्रभुत्व, पोज़ीशन आदि ही मनुष्य प्रकृति को आकर्षित करते हैं। हमारे राजनैतिक नेता इसके दिवाने होते हैं। यह सब आकर्षण मनुष्य को अन्धकार से भरते हैं। इसमें बहुमूल्य सचाईयों को देखने की समर्थ्य ही समाप्त हो जाती है।

परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है, यह सचाई केवल उन जनों को दिखाई दे सकती है, जिनको ज़िन्दगी की असारता नज़र आती है, जिन्हें आयु बहुत रफ्तार से भागती हुई नज़र आती है। जिन्हें मृत्यु याद नहीं रहती और यह अनुभव गहरा नहीं होता है कि सदा इस संसार में नहीं रहना, वह अन्धेरे के जीवन अर्थात् सांसारिक सुखों, स्वादों, वाह-वाह, पोशाकों, जेवरों, कारों, कोठियों, खानों, पार्टियों आदि पर परवाने की तरह निछावर होते रहते हैं और अन्त समय आ जाता है। वह खाली हाथ सिकन्दर बादशाह की तरह जाने के लिए बेबस होते हैं।

भगवान ने एक बार फरमाया था कि, "हम नेचर के एक तुच्छ अंश हैं, हमारे पास जो कुछ भी हैं, वह नेचर की ओर से बतौर अमानत हैं। यह हकीकत यदि तुम्हारे सामने खुले, यदि यह सत्य तुम्हें दिखाई दें तो क्या यह दिखाई नहीं देना चाहिए कि यदि यह सब अमानत हैं, तो उसके सम्बन्ध में देवात्मा जो रोशनी रखते हैं, उसमें क्या शिक्षा देते हैं? उनकी शिक्षा है कि मनुष्य को सब ताकतों से ऊपर होना चाहिए कि जो मनुष्य को अमानत में ख़्यानत करने के लिए मजबूर करती हैं, और दूसरी ओर उस धन को नेचर के विकासकारी नियम का साथ देने के लिए इस प्रकार काम में लाना चाहिए :-

1) अपने आश्रित जनों की रक्षा वा उन्नति के लिए।

2) अपने सम्बन्धों में जहां हानिकारक बने हैं, परिशोध करने के लिए।

3) जिस जगत से हमने हित पाया है या पा रहे हैं या हित पाने की आशा करते हैं, उन हितकर्ताओं की सेवा के लिए।

4) इस नेचर के भीतर जो और अस्तित्व हैं, जो हमारे उपकारी भी नहीं, उनकी बेहतरी या उनके उपकार के लिए, इसमें सब आ जाते हैं। हमें इस विधि से अपने धन और अपनी जायदाद को खर्च करना चाहिए। अब इसके सम्बन्ध में ख़्यानत कब होती है, वहां जब कोई जनहित, परिशोध या हानि परिशोध के भाव से किसी के लिए कुछ करना नहीं चाहता। ऐसे अमल सब चोरी (डाका) और अपहरण में शामिल हैं, जिससे आत्मा नीच गति पाकर खत्म हो जाता है। हमारे पास जो कुछ है, वह हम इसी प्रकार खर्च करते हैं।

गुरु महाराज बार-बार यह सचाई रोशन करने का यत्न करते रहते थे कि जब तक कोई अपने से निकलकर, दूसरों के लिए सेवाकारी होना आरम्भ नहीं करता, तब तक धर्म जीवन का आरम्भ ही नहीं होता।

पर सेवा के बिना मनुष्य एक मुर्दा लाश रह जाता है, अन्तर केवल इतना है कि उसके सांस चलते हैं।

परोपकार के बिना मनुष्य एक पशु ही रह जाता है, पशु भी अपने लिए मारे-मारे फिरते हैं, ऐसा मनुष्य गोबर का एक कीड़ा है, जिसका काम केवल पेट भरना है। महापुरुषों ने कितना सुन्दर फरमाया है :-

"बिन सेवा, धरिग हथ पैर" सेवा और सच्चा परोपकार ही धर्म जीवन का सार है। जहां यह नहीं, वहां कोई नेकी वा धर्म नहीं, वह धर्म वा सम्प्रदाय ही मुर्दा हो जाते हैं, जिनमें परोपकार सूख जाता है। लाला

लाजपतराय जी सुबह उठते ही प्रतिदिन एक थैले में काफी सिक्के डाल लेते। अपने सरगर्मी के कामों में भी वह जरूरतमन्दों में पैसे बांटते थे। मिस्त्री वधावा राम जी (दाता जी) दिहाड़ी करके उसमें से ही सेवा के लिए समय निकालते और कुछ घण्टे सेवा की भीख़ मांगते।

श्रीमती जमना बाई जी, धर्म पत्नी सेठ श्री राधा कृष्ण जी, बुढ़ापे में प्रतिवर्ष कई महीने संगत में आती, एक राजे जैसे घर की होकर कई घण्टे लोगों के घरों में विज़िट करतीं और दान में आटा, दाल तक ले आतीं। देवधर्म का प्रचार करती, पाप छुड़वाती, स्त्रियों से मिथ्या छुड़वातीं, वृद्ध होकर भी परोपकार द्वारा भला करने से नहीं हटती थी। काश हमें गुरु महाराज की रोशनी मिल सके और यह सचाई कि परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है समझ आ सके, दिल में गहरी उतर सके और हम पशु जीवन से निकल सकें।

(बलदेव सिंह)

अनजान मददगार

एक स्त्री लिखवती हैं :-

मेरी पाँच वर्ष की बेटी की एक बार अचानक तबीयत खराब हो गई। उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। हमने डॉक्टर को दिखाया, तो उन्होंने उसे तुरन्त अस्पताल में भर्ती करने के लिए कहा। जांच के बाद पता चला कि उसके एक फेफड़े में पानी भर गया है और उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही है। डॉक्टर ने ऑपरेशन की सलाह दी और साथ ही आश्वासन भी कि वह पूरी तरह ठीक हो जाएगी। ऑपरेशन के पहले पता चला कि बेटी का रक्त-समूह ओ-निगेटिव है और इस ब्लड-ग्रुप का रक्त अस्पताल में मौजूद नहीं है। एक हफ्ते बाद ऑपरेशन था और हम रक्तदाता की तलाश में लग गए। हमने सारी कोशिशें कर लीं पर बात नहीं बनी।

ऑपरेशन की नियत तारीख के एक दिन पहले ही डॉक्टर ने आकर कहा कि उन्होंने भी अपनी तरफ से प्रयत्न किए, पर रक्तदाता न मिला, तो वे ऑपरेशन नहीं कर पाएंगे। हम लोग बेहद निराश हो गए थे। बच्ची की तकलीफ हमसे देखी नहीं जा रही थी। वह रात हमने चिंता और आंसुओं में बिता दी। सुबह हताश से बैठे थे कि एक सज्जन ने प्रवेश किया और डॉक्टर से बात की। फिर वो अपरिचित व्यक्ति मेरे पास आकर बोले, "आपकी ही बेटी को खून की जरूरत है न?" मेरा ब्लड-ग्रुप ओ-निगोटिव है। आप बिल्कुल मत घबराए, आपकी बेटी ठीक हो जाएगी।

मैं रो पड़ी, 'मैं जिन्दगी भर आपका एहसान नहीं चुका सकती।' वे मुस्कराकर बोले, 'चुका सकती हैं। वादा कीजिए कि आप बेटी के बड़ी होने के बाद उसे रक्तदान के लिए प्रेरित करेंगी। यह ब्लड-ग्रुप बहुत कम लोगों का होता है, इसलिए अधिकांशत: लोग मुश्किल में पड़ जाते हैं। उन्होंने नहीं बताया लेकिन बाद में हमें पता चला कि वे हमारे शहर रायपुर के नहीं थे। बल्कि किसी काम से यहां आए थे और स्टेशन पर हमारी बेटी के बारे में सुनकर ट्रेन छोड़कर रक्त देने चले आए थे।

बेटी का ऑपरेशन सफल रहा और अब वह बिल्कुल स्वस्थ है। आज भी हम उस अनजान व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता महसूस करते हैं। अब हमारी भी कोशिश रहती है कि जरूरतमंद को रक्त दे सकें और बेटी में भी यह संस्कार डालें कि वह भी इस धर्म को निभा सके।

एकता में ही शान्ति का समन्वय है।

हम सब शान्ति चाहते हैं। संसार में, देश में, परिवार में, संस्थाओं में, अर्थात् प्रत्येक मनुष्य शान्ति से जीना चाहता है। आजकल peace day मनाने का भी प्रचलन हो गया है, परन्तु यह दिन केवल रिवाज के तौर पर मनाए जाते हैं, लैक्चर होते हैं और उनकी बड़ी-बड़ी रिपोर्टें छप जाती हैं, अखबारों में किस-किस संस्था में यह दिन मनाया गया, कौन Chief Guest आया आदि रिपोर्ट छप जाती है। परन्तु अब प्रश्न यह है कि क्या इससे शान्ति लाने का प्रयास सफल होता है? क्या हमें यह भी ज्ञात है कि अशान्ति के कारण कहां वर्तमान हैं? इसका उत्तर साधारणत: न में ही मिलेगा।

सर्व प्रथम हमें यह जानने की अवश्यकता है कि हम भौतिक जगत (Non living world), वनस्पति जगत (Plant life), पशु जगत (Animal World), मनुष्य जगत (Human being) पर निर्भर हैं। जैसे परिवार में शान्ति के लिए हमें सारे परिवारिक जनों के साथ ही शान्ति पूर्वक व्यवहार की आवश्यकता है और यदि एक सदस्य भी हमारे कारण अशांत है, तो सब पारिवारिक जन ही अशान्त रहेंगे। वैसे यही नियम संस्थाओं, देशों और संसार में व्यापक है।

मनुष्य ने बहुत उन्नति की है। भौतिक जगत को बहुत कुछ फतह किया है। भौतिक जगत की वस्तुओं का प्रयोग करते-करते यह भूल ही गया कि हम उसको इतनी हानि पहुँचा देंगे कि इससे हमारी ज़िन्दगी में ही खलबली मच जाएगी। सूर्य, समुन्द्र, नदियों, पहाड़ों सबको हमने सुख के साधन के रूप में गल्त तरीके से प्रयोग करना आरम्भ कर दिया, जिसकी हानि अब सारी मानवता को भुगतनी पड़ रही है। आने वाली नसलों के लिए तो हमने जीने का मार्ग ही नहीं छोड़ा। तो इसका अर्थ है कि जब तक हम भौतिक वस्तुओं के साथ तालमेल नहीं बिठाएंगे, तब तक हम शान्ति-शान्ति पुकारते रहें, परन्तु शान्ति प्राप्त नहीं कर सकते।

यही मनुष्य की अवस्था वनस्पति जगत के सम्बन्ध में है। वृक्षों का अन्धाधुन्ध काटे जाना, जंगलों का समाप्त होना और खेतों के स्थान कंकरीट की बनी भव्य कोलोनीज़, जो हमारी सम्पन्नता का चिन्ह तो दिखती हैं, परन्तु हमारी ज़िन्दगी हमसे छीन रही हैं। आक्सीजन कम हो रही है और प्रदूषण बढ़ रहा है। हम शारीरिक रूप से विकलांग हो रहे हैं, बच्चों के मुख पर अब वह चमक नहीं दिखती, जो हरे भरे स्थानों पर खेलने, घूमने से आती थी। शान्ति दिवस कितने मना लें, परन्तु अशान्ति के मार्ग की ओर हम लगातार बढ़ रहे हैं।

पशु जगत, जो हमारा पूर्वज है, वह हमारे हाथों बेज़ार है। सुबह होते ही लाखों पशु कट जाते है, उनकी चीखो पुकार आज हमें नहीं सुन रही, केवल स्वाद सुख वा अपना स्वास्थ्य दिखता है, परन्तु क्या काटने वाले, क्या बनाने वाले और क्या खाने वाले यह नहीं जानते कि वह अपनी हमदर्दी खो रहे हैं और उनमें क्रूरता बढ़ रही है, उसी का परिणाम आतंकवाद

है। पशु काटते-काटते मनुष्य हिंसक जीव बन गया है। इसके दूरगामी परिणाम कितने भयानक होंगे, अभी भी मानवता की समझ में नहीं आ रहे।

चौथा जगत है मानव जगत, जो इन तीनों जगतों के बिना सम्भव नहीं। यह चारों जगत इतने एक दूसरे पर निर्भर हैं कि एक की हानि दूसरे को प्रभावित करती है। परन्तु इनमें से मनुष्य जगत सबसे श्रेष्ठ प्राणी है, जो सोच सकता है और अपनी और इन जगतों की उन्नति के लिए कुछ कर सकता है। परन्तु मनुष्य की तीक्ष्ण बुद्धि के साथ, उसका सुख के प्रति गहरा आकर्षण हर वस्तु को अपने सुख के लिए प्रयोग में लाने के लिए मजबूर करता है। उसने प्रत्येक जगत को अपने सुख के लिए प्रयोग किया और उसके परिणामों की ओर नहीं देखा। उसका नतीजा हमारे सामने है Global Warming, 'ऋतुएं बदल रही हैं, सैलाब आ रहे हैं, गलेशियर पिघल रहे हैं, बिमारियां बढ़ रही है। कुपोषण का शिकार बच्चे, बूढ़े, नौजवान हो रहे हैं। आतंकवाद बढ़ रहा है। ऐसी अवस्था में विश्व शान्ति का सपना केवल सपना बन कर रह गया है।

यह सब परिणाम तो बाह्यक परिणाम हैं, जो मनुष्य की सुख अनुरागी प्रकृति की उपज हैं। परन्तु जो अशान्ति घरों में है, संस्थाओं में है, समाजों में है, देशों में है, वह हम प्रतिदिन अखबारों में पढ़ रहे हैं। कुछ-कुछ सुधारक आते हैं, कोशिश करते हैं, परन्तु उन्हें स्वयं नहीं पता कि वास्तव में कारण क्या है।

वास्तविक कारण मनुष्य की मूल प्रकृति में है। जो अध्यात्मिक वैज्ञानिक परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने खोजा, और हम लोगों पर ज़ाहिर किया है।

स्वार्थ :- सुख अनुरागी प्रकृति से स्वार्थ की उपज होती है। स्वार्थी मनुष्य अपने घर, अपनी समाज वा देश का सगा नहीं। इसके वशीभूत होकर ही फसाद, बेईमानी, चोरी, षड्यन्त्र, रिश्वत खोरी, अपनों का कत्ल, अपहरण जैसे पाप होते हैं, जहां यह सब कुछ हो, वहां शान्ति कहां।

घमंड :- स्वार्थ से घमंड उपजता है, मनुष्य नीच होकर भी अपने आपको बड़ा दिखाना चाहता है। अपने विरुद्ध ठीक बात को भी नहीं सुन सकता। छोटा सा बच्चा भी, अपने विरुद्ध सुनकर अपने उपकारियों को शत्रु समझने लगता है। अपने भले की बात भी नहीं सुन सकता, यहां तक कि अपने उपकारियों की जिन पर रात दिन निर्भर है, शक्ल देखना नहीं चाहता। आपसी टकराहट होती है, उपकारियों के दिल छलनी हो जाते हैं। इस कारण घरों में, दफतरों में, समाजों में, देशों में टकराहट है, तो शान्ति का सपना, बेकार है।

नीच घृणा :- ईषा, द्वेष, घमंड से नीच घृणा पैदा होती है। अपने विरुद्ध ठीक बात सुनकर भी मनुष्य आग बबूला हो जाता है। यहां तक कि उपकारियों को कत्ल करने तक की नौबत आ जाती है। अपने से गुणधारियों, सामाजिक दायरे में भी, दिलोजान से काम करने वालों, कई सूरतों में अपने उपकारियों, अपने से बहुत अधिक योग्यता रखने वालों को नीच घृणा करता है। उनके गुणधारी रूप को देखने के स्थान पर उनसे ईर्षा से भर जाता है। जगह-जगह पर उनकी निन्दा करके, झूठे इल्ज़ाम लगाकर, अपनी तृप्ति पाता है। जब यह भाव और

गहरे हो जाते हैं, तो अपने से बड़ों, उपकारियों, कार्यकर्ताओं को हानि पहुँचाने का पूरा प्रयत्न करता है। उनके उचित हकों का अपहरण करता है।

मान, बड़ाई, पद, प्रभुत्व :- यह भाव मनुष्य के बहुत बड़े शत्रु हैं। मान बड़ाई में, अपनी पहुँच से अधिक खर्च करके, दिखावा करके तरह-तरह की मुसीबतों में घिर जाता है। जो खुशी प्राप्त करने के लिए कर रहा था, वह उसके depression का कारण बन जाते हैं। पद प्रभुत्व के लिए कितने झूठ, फरेब, षड्यन्त्र रचता है, उसकी कोई सीमा नहीं और उसके चले जाने से अथाह दुखों में से गुज़रता है।

यह कुछ मोटे सुख अनुराग हैं जो न केवल मनुष्य को स्वयं अशांत रखते हैं, बल्कि परिवारों, समाजों और देशों को तबाह कर देते हैं। इनका ज्ञान पाए बिना और उन्हें दूर किए बिना हम विश्व शान्ति तो क्या पारिवारिक शान्ति की भी कल्पना नहीं कर सकते।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने एकता वा शान्ति स्थापन करने के लिए चारों जगतों के सम्बन्ध में कर्तव्य कर्मों वा वर्जित कर्मों के महा हितकर आदेश दिए हैं, जिनकी पालना से विश्व शान्ति का स्वप्न साकार हो सकता है। सुख अनुरागों ने हमें इतना अन्धा किया हुआ है कि सारे विश्व की शाक्तियां केवल सुख प्राप्ति में लगी हुई हैं, परन्तु सारा विश्व दुखों के गर्त में गिर रहा है।

धर्मों की, मन्दिरों की, गुरुद्वारों की गिनती बढ़ रही है, बड़े-बड़ सन्तों के उपदेशों में लाखों की गिनती में लोग शामिल होते हैं, ओम शान्ति की बहुत पुकार है, परन्तु दिन पर दिन कत्ल, आतंकवाद, शत्रुता बढ़ रहे हैं। असल कारणों का किसी को ज्ञान नहीं। नाम जपने, भव्य सत्संग रखने, बड़े-बड़े तीर्थों के भ्रमण करने पर यह भी समझ नहीं आ सकती कि धर्मों के नाम पर टकराहट क्यों? इतना कत्लों गारत क्यों? अधिकतर खून खराबा धर्म के नाम पर हो रहा है। मन्दिरों, गुरुद्वारों में आतंकवाद पनप रहा है, बड़े मठों वा धर्म स्थानों पर बलात्कार की घटनाएं प्रतिदिन बढ़ रही हैं, शान्ति की पुकार मचाने वाले साधु महात्मा अपराधियों की कतार में आ गए हैं। ऐसे में अन्धकार में ग्रस्त जनता अपने आप से प्रश्न नहीं पूछती कि यदि धर्म स्थानों पर ऐसे पापाचार वा मृत्यु दायक हादसे नहीं रुकते तो साफ ज़ाहिर है कि धर्म गुरुओं में ऐसी कोई क्षमता नहीं। वह केवल धन कमाने, पंडितों वा मौलवीयों के ऐशो आराम के साधन हैं।

शान्ति उपरोक्त नीच भावों को समझने उनको मिटाने, सेवा, परोपकार, कृतज्ञता, हमदर्दी, कर्त्तव्य पालन जैसे भावों को पैदा करने से आ सकती है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने मनुष्य की प्रकृति को तार-तार करके दिखाया है कि जब तक मनुष्य के नीच सुख अनुराग उस पर हावी हैं, मनुष्य न स्वयं शान्ति में रह सकता है और न किसी को रहने दे सकता है। जिस-जिस घर में, मनुष्यों के हृदय में उनकी रोशनी पहुंची है, वहां कलह कलेश गया है और शान्ति वा एकता का वास हुआ है। ऐसे परिवारों की अनगिनत घटनाएं हैं जो इस सत्य को स्थापित करती हैं।

(सुरजीत बराड़)

गुणों पर अवगुण भारी

रावण कहता था कि वह अजय है, अमर है, यह अहंकार रूपी अवगुण ही उसे ले डूबा। कहा जाता है कि रावण चार वेदों का ज्ञाता था, लेकिन आज दुनिया उसे क्रूर वा अधर्मी के रूप में जानती है। एक अवगुण तुम्हारी ज़िन्दगी बदल सकता है। भविष्य को पलट सकता है।

मंदोदरी, उसकी पत्नी ने कितनी बार उसे समझाने का प्रयत्न किया कि तुम्हारा मार्ग तबाही का मार्ग है, परन्तु अहंकार की मद में चूर रावण उसको मूर्ख वा मंद बुद्धि कहकर और यह कहकर फटकार देता था कि उसकी पत्नी में उसकी शक्ति को पहचानने की योग्यता नहीं है।

लालच, गुस्सा, आलस्य, ईर्षा, द्वेष, स्वार्थ, मान बड़ाई इन्सान के भीतर सबसे बड़े रावण हैं। रावण की एक बुराई के कारण उसकी 100 अच्छाईयां नज़र अन्दाज़ हो गई थीं।

यदि हम इतिहास पर नज़र डालें, तो हम इस बात को शत प्रतिशत स्वीकार करेंगे। इस बात की घरों में, संस्थाओं में, समाजों में, देशों में, विश्व में विशाल और स्पष्ट झलक मिलती है।

हमारा देश जो सोने की चिड़िया कहलाता था, वह गुलाम कैसे बन गया? पृथ्वीराज चौहान जो एक अद्‌भुत योग्यता का मालिक था, देश भक्ति की मूर्ति था, उसका साहस, उसकी प्रजा के प्रति सहानुभूति, उसकी देश के प्रति वफादारी एक उदाहरण थी, यही कारण था कि उसके नाना ने जो दिल्ली के महाराजा थे, उनके यहां नर सन्तान न होने के कारण, पृथ्वीराज को मात्र 13 - 14 वर्ष की उमर में दिल्ली का महाराजा बना दिया, क्योंकि पृथ्वीराज की योग्यता को देख कर उन्हें पूर्ण निश्वास था कि वह एक योग्य राजा बनने की योग्यता रखता है।

पृथ्वी का एक मौसेरा भाई जय चन्द था, जो उससे काफी बड़ा था, उसको यह बात नागवार गुज़री और ईर्षा, द्वेष से जल गया। जब मुहम्म गौरी ने भारत में प्रवेश किया, तो उसने भी भारतवासियों के स्वार्थ, ईर्षा, द्वेष की कमज़ोरी को भांप लिया। कितने कमजोर राजा थे, जो पृथ्वीराज की योग्यता और राज के विस्तार से भयभीत थे। बजाय इसके कि वह पृथ्वीराज की योग्यताओं के प्रशंसक बनते, वह उसे ही गिराना चाहते थे। क्या और राजाओं की और क्या जय चन्द की इस ईर्षा, द्वेष वा स्वार्थ की कमज़ोरी ने हमारे सोने की चिड़िया कहलाने वाले देश को एक डाकू के हाथों बेच दिया। पृथ्वीराज ने मुहम्मद गौरी का खूब डटकर मुकाबला किया, और एक दो दफा मुहम्मद गौरी उसके हाथों मरते - मरते बचा, परन्तु पृथ्वीराज की दया भावना ने उसके गिड़गिड़ाने पर उसे क्षमा कर दिया। परन्तु सांप कभी अपनी फितरत नहीं बदलता, एक दयावान यह बात भूल जाता है।

भारतीय राजाओं की कमज़ोरी को भांपते हुए मुहम्मद गौरी ने भारत पर कितने हमले किए, पृथ्वीराज ने उसे कितनी बार खदेड़ा, लेकिन मुहम्मद गौरी भारतीयों की स्वार्थ और ईर्षा द्वेष की प्रकृति को जान गया था, और आखिर पृथ्वीराज को धोखे से मारने में सफल हो गया और स्वयं भी मारा गया, इसके साथ ही देश की गुलामी का मार्ग प्रशस्त हो गया। जितने हमलावर आए, वह देश को लूटते रहे और कमज़ोर करते रहे।

यही पौलिसी अंग्रेजों ने अपनाई। एक - एक

करके छोटे नवाबों, राजों को खरीदते रहे और देश को कमज़ोर करते रहे और प्राय: 200 वर्ष तक हमारी सोने की चिड़िया कहलाने वाला देश गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ा गया। इन ज़ंजीरों को तोड़ने के लिए कितने वर्ष लगे, कितने लोगों की जाने गईं, कितनों ने जेलों में तसीहे काटे, कितने फांसी पर लटकाए गए, यह सारी घटनाएं दिल को दहला देने वाली हैं।

स्वार्थ मनुष्य को देश, जाति और समाज का दुश्मन बना देता है और वह स्वयं का भी दुश्मन बन जाता है। यहां तक कि धार्मिक संगठन वा धार्मिक संस्थाएं भी इससे अछूती नहीं रहती। अंह और स्वार्थ, नीच घृणा और द्वेष मनुष्य को धर्म से कोसों दूर ले जा फैंकता है। अक्सर धार्मिक संगठनों में उपरोक्त कारणों से गुटबाजी और खींचातानी, निज प्रभुत्व की होड़ लगी देखी जाती है।

धार्मिक बनते-बनते आदमी धर्म संस्थानों में धर्म की राह से अक्सर भटक जाता है। अपने जीवन को ऊंचे से ऊंचा उठाना और पर हित के मार्ग में अधिक से अधिक बलिदान देना और निज सुख, स्वाद, पद, प्रभुत्व से उपराम होना लक्ष्य नहीं रह जाता। निज सुख लालसाएं तृप्त करना ही लक्ष्य बन जाता है। इस लक्ष्य की सिद्धि में रुकावट बनने वाले चाहे कितने ही सदमार्ग अवलम्बी हों, अपने और दूसरों के हित के लिए प्रयत्नशील हों, त्याग भावना से भरकर, जोश से भरकर पर सेवा में रत हों, उन्हें अपने स्वार्थ सिद्धि में रोड़ा जानकर शत्रु की तरह मार भगाने में ही धर्म अनुभव करता है।

जैसे पृथ्वीराज चौहान की वफादारी, देश के प्रति समर्पण भावना के प्रति नतमस्तक होने के स्थान पर, अपने स्वार्थ के लिए अपने देश को लूटने वाले बर्बाद करने वाले का साथी बनकर देश को गुलामी की राह पर डाल दिया, उसी प्रकार जगह-जगह पर हमें मनुष्यों के स्वार्थ की लीला दिखाई पड़ती है। छोटे-छोटे लालच, बुज़दिली हमें अपने देश और समाज का दुश्मन बना देते हैं। हम मनुष्यात्माओं की यही कृपा पात्र अवस्था है।

किसी भी देश, समाज व संगठनों के पतन की ओर निगाह ले जाएं तो उसका कारण मुख्य रूप से यही कमज़ोरियां हैं। बड़े-बड़े कारज बहुत उच्च लक्ष्य को लेकर आरम्भ होते हैं, उभरते हैं, तहलका मचा देते हैं, परन्तु एक नीच सुख अनुराग की कमज़ोरी उन्हें खोखला कर देती है। वैसे ही स्वार्थी और नीच जीवन धारी अन्य जन उसकी पोषकता करते हैं और वह उच्च लक्ष्य लोप हो जाता है। आज़ादी प्राप्ति का लक्ष्य उच्च था, गांधी जी ने किस भारत का सपना देखा था, परन्तु स्वार्थी राजनीतिज्ञों के हाथों आज बेईमानी, रिश्वतखोरी, घोटालों का राज है। अपने पैसे का स्वार्थ एक-एक सीनियर अफसरों को जो देश के रखवाले होते हैं, देश के गुप्त रहस्य बेचने के लिए मजबूर कर देता है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों में ही वह सामर्थ्य है कि मनुष्य अपनी कमज़ोरियों को देख सकता है, वा उनके बल से उनसे निजात पा सकता है। हमने उनके दर से बेइन्तहा उपकार पाए हैं, कुछ न कुछ मोटे पापों से बचे हैं, परन्तु हम अपने-अपने हृदय में झांक कर देखें कि कहीं हमारी कोई कमज़ोरी उनके काम को, उनके महान लक्ष्य को, उनके कारज को, उनकी संस्थाओं को कोई हानि तो नहीं पहुंचा रही? जितना ऊंचा लक्ष्य, उसको हानि पहुँचाना उतना ही बड़ा पाप है। हमारे जीवनों की बेहतरी ही उनके लक्ष्य में सहायक हो सकती है, नहीं "कस्में, वायदे, त्याग, वफा, सब बातें है, बातों का क्या?" हम पृथ्वीराज चौहान बनें, जयचन्द नहीं।

सुरजीत बराड़

स्वार्थ का महा नीच अनुराग

जब कोई जन स्वार्थ का बहुत अधिक दास बन जाता है। तब वह अपने नाना सम्बन्धियों के सम्पर्क में आकर उनसे अपनी एक या दूसरी शारीरिक आवश्यकता या शारीरिक नीच अनुराग की तृप्ति या धन से प्राप्त होने वाली किसी वस्तु की प्राप्ति की अनुचित रूप से बहुत कुछ आशाएं करता रहता है। हां, एक-एक जन सच्चे धर्म अवतार भगवान देवात्मा की शरण में आकर और उनकी निराली धर्म समाज का अंग बनकर उनसे भी अपने एक या दूसरे ऐसे नीच सुख की तृप्ति में सहायता पाने की आकांक्षाएं करता रहता है कि जिस नीच सुख के तृप्ति वह अपने अन्य सम्बन्धियों से चाहता रहता था या अब चाहता है। वह यदि गुज़ारे के लिए समाज से कुछ आर्थिक मदद प्राप्त करता है या किसी और के पास इसी अवस्था में काम करता है तो वह यह नहीं बोध करता कि वह इसके बदले में उनकी सेवा का कितना काम करता है? क्या सचाई की बिना पर उसकी वह सेवा इतने मूल्य की है कि जिससे जहां एक ओर वह जो कुछ औरों पर आर्थिक बोझ डालता है, वह अदा हो जाता हो; वहां दूसरी ओर इससे बढ़कर वह अपनी आर्थिक सहायता करने वालों के लिए एक या दूसरे अंग में किसी उच्च भाव से सेवाकारी बनता हो। ऐसा स्वार्थी जन दिनों-दिन ऐसा कठोर बनता जाता है कि उसके भीतर यदि कोई शुद्ध उपकार का भाव कभी कुछ पैदा भी होता हो तो वह उन्नत होकर अनुराग का रूप ग्रहण नहीं कर सकता और इसलिए ऐसा जन सारी आयु स्वार्थ का अनुरागी रहकर ही अपना जीवन व्यतीत कर देता है और धीरे-धीरे ऐसी अवस्था में पहुंच जाता है कि फिर उसके भीतर कभी भी कोई उच्च अनुराग जागृत व विकसित न हो सके और इसलिए ऐसा जन कभी भी सच्चा धर्मवान बनकर अपने जीवन का सच्चा विकास साधन न कर सके बल्कि केवल विनाश के चक्कर में ही पड़ा रहकर दिनों दिन नष्ट होता जाए और ऐसे भयानक विनाश के मार्ग के फलों को अधिक से अधिक प्राप्त करे। किसी जन के लिए धर्म के जगत में प्रवेश करने के लिए जो एक आवश्यक शर्त विशुद्ध परोपकार अनुरागी बनने की है, उसकी पूर्ति के बिना कोई जन भी ऐसे जगत में क्योंकर प्रवेश कर सकता है। इसके अतिरिक्त कई जन तो इतने स्वार्थी होते हैं कि वह अपने उपकारियों की भी किसी उच्च भाव से कोई संतोषजनक सेवा नहीं कर सकते और जो कुछ करते हैं, उसमें वह सदा अपनी नीच "मैं" को ही मुख्य रखते हैं। इसलिए जब ही उनकी नीच "मैं" की तृप्ति में विघ्न पड़ता है तो वह तत्काल अपने किसी भले कार्य को त्याग देते हैं और फिर ऐसे स्वार्थी जन अगर किसी भले काम में कोई दान पुण्य करने का सिलसिला आरंभ कर देते हों तो वह उस सिलसिले को भी लगातार जारी नहीं रख सकते और न ही बढ़ा सकते हैं। ऐसे स्वार्थी जन कभी भी पूर्ण आत्म समर्पणकारी जन बनने का महा सौभाग्य लाभ नहीं कर सकते जो कि धर्म जगत में प्रवेश होने के लिए एक आवश्यक शर्त है। वह तो ऐसी अवस्था में रहते हैं कि उन्हें सेवा प्राप्त करने में जितना लाभ दिखाई देता है, उतना सेवा करने में दिखाई नहीं देता। ऐसी अवस्था में उनके स्वार्थ भाव पर यदि किसी की ओर से कोई आघात लगे तो वह झट बिगड़ जाते हैं। वह अपनी स्वार्थ परता की दासता के कारण और तो और अपने ही आत्मिक कल्याण के सम्बन्ध में भी अपने हितकारियों से कोई उचित सहायता प्राप्त करना नहीं चाहते और ऐसी सहायता की सच्ची कदर नहीं करते और इसके विरुद्ध वह ऐसे उपकारियों से भी सदा अपने एक या दूसरी नीच सुख लालसा की ही तृप्ति की ही आशा करते रहते हैं। ओह, किसी स्वार्थ अनुरागी जन की यह अवस्था कैसी महाभयानक और महाकृपापात्र है!

शुभ संग्राम

लखनऊ :- श्री रूप चन्द जी और उनके सुपुत्र श्रीमान देवकी नन्दन जी के बहुत चाहने पर लखनऊ के स्थान पर सत्संग रखा गया। 2 अक्तूबर की रात को श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी पांच और धर्म सम्बन्धियों के साथ अम्बाला, चण्डीगढ़ से चलकर तीन अक्तूबर सुबह लखनऊ पहुँच गए। स्टेशन पर विक्की, सुपुत्र श्रीमान देवकी नंदन जी बड़ी गाड़ी लेकर पहुँचे हुए थे। घर पहुँचने पर देवकी नन्दन जी ने फूलों के हारों के द्वारा सब धर्म सम्बन्धियों का स्वागत किया। 3 अक्तूबर शाम को एक सभा रखी गई, जो श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। सभा में श्रीमान रूप चन्द जी, दोनों उनके सुपुत्र परिवार सहित शामिल हुए।

सभा में श्रीमान जी ने इस सचाई पर ज़ोर दिया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से दूर रहकर आत्मा की अवस्था ऐसी हो जाती है कि जैसे ऑपरेशन के समय मरीज़ को एनस्थीसीया दिए जाने से होती है। उसे कोई दुख दर्द अनुभव नहीं होता। बेहोशी में अपनी बिमारी का भी कोई फिकर अनुभव नहीं होता, इसी प्रकार सांसारिक वातावरण में उच्च बोध वा उच्च लक्ष्य विहीन आत्मा बेसुधि की अवस्था में पहुंच जाते हैं। आत्मा की खुराक, उच्च संगत की भूख मारी जाती है। देवात्मा के देव प्रभाव जो महा श्रेष्ठ, महा पवित्र और केवल हित उत्पादक हैं, इसकी भी होश नहीं रहती। नीच जनों की संगत प्यारी लगने लगती है। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के अनुभव बार-बार दोहरा कर तत्व समझाने का भरपूर जोरदार संग्राम किया कि यह देवात्मा के देवप्रभाव मनुष्य के लिए कैसे परम आवश्यक है। वह क्यों परम श्रेष्ठ हैं, महा पवित्र है, देव प्रभावों का स्वभाव केवल हित उत्पादक है। हाज़रीन देव प्रभाव दायक संगत को अपने लिए बहुत आवश्यक अनुभव कर रहे थे।

4.10.2008, सुबह 9.30 बजे :- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। सभा में इस बात पर ज़ोर दिया गया कि यदि मनुष्य को यह बात समझ आ जाए कि मनुष्य सुख का प्रेमी है, तो उसकी बहुत सी समस्याएं हल हो सकती है। सुख अनुरागी यह होश नहीं रख सकता, वह सुख की तृप्ति में मिथ्या झूठ का राही बनता है या पाप, बुराई का साथी बनता है। विश्व के विकासकारी नियम द्वारा ऐसा ज़हूर हुआ कि जिसके भीतर सुख अनुराग का दोष या कमी नहीं है। देवात्मा का ज़हूर सत्य और शुभ अनुरागों की देव शक्तियों को प्राप्त हुआ है। देव शक्तियों से देव ज्योति और देव तेज को विकास हुआ है। सत्य और शुभ का पूर्णांग प्रेम होने के कारण देवात्मा ही सच्चे देवता हैं। उनके भीतर सब प्रकार के झूठ वा बुराई के लिए पूर्णांग घृणा है। हमारा सौभाग्य है कि हमें उन के द्वारा पैदा की हुई देव धर्म की संगत नसीब हो जाती है। जब किसी अधिकारी आत्मा को थोड़ी बहुत मात्रा में देव

प्रभावों की प्राप्ति हो जाती है, तो वह अपनी आत्मिक शक्तियों को वास्तविक रूप में देखने के कुछ योग्य हो जाता है। अपने आपको बदलने की जोरदार अकांक्षा अनुभव करता है। कठिनाई यह है कि अधिकतर मनुष्य पर अंह का इतना अधिकार है, जो उसे अधिकारी अवस्था में नहीं आने देता, जिससे उसके भीतर देव प्रभाव पहुंच सकें। सभापति जी ने देव प्रभावों के द्वारा अपने भीतर आए आश्चर्य जनक परिवर्तन की कुछ घटनाएं पेश कीं। बाद में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी दो सुन्दर दृष्टांतों द्वारा इस सचाई को और उज्ज्वल रूप से प्रस्तुत किया।

4.10.2008, 5.00 बजे शाम :- अमन का जन्म दिन था (श्रीमान रूप चन्द जी का पड़पोता) उसे जन्म दिन की मुबारकबाद, उसकी लम्बी उमर, सेहतमन्द ज़िन्दगी और उच्च जीवन के लिए शुभ कामनाएं दीं। ऐसा हो कि तुम परम पूजनीय भगवान देवात्मा को, उनके देवरूप वा देव प्रभावों के कारज को पहचान सको। आपकी अच्छी विरासत की रक्षा और विकास हो। बहुत अच्छा बनने के लिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा को पहचानना आवश्यक है। बच्चों का जन्म दिन मनाना हम भारतीयों की संस्कृति नहीं। माता पिता का जन्म दिन मनाना अधिक हितकर है। माता पिता को जन्म दाता महसूस करके और अपने आपको कर्ज़दार महसूस करके, जो अनुष्ठान किया जावे, वह बहुत महत्त्व रखता है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने सम्बन्धों में शुभ व्यवहारों को जी कर दिखाया है। प्रियंका (सोनिया गांधी जी की बेटी) जेल में उस कैदी औरत को मिलने के लिए गई, जो राजीव गांधी के दो कातिलों में से एक है, उन्होंने उससे पूछा, "तुमने मेरे पिता को क्यों मारा?" मेरे पिता तो भले आदमी थे, हमारे दिलों में आपके लिए कोई घृणा नहीं है" अच्छा होना, भला होना कठिन है, पर कोई पाठ या कहलाने वाले धार्मिक साधन करना कठिन नहीं। गांधी जी ने स्कूल का इन्सपैक्शन होने पर, अध्यापक के कहने पर भी नकल नहीं मारी। माता ने गांधी जी से नशे, मांसाहार न करने वा कुछ और प्रतिज्ञाएं करवाईं, जब गांधी जी विदेश जा रहे थे। अच्छे बच्चे अच्छी संगत करते हैं। अच्छे बच्चे माता पिता की आज्ञा याद रखते हैं। बाबू अमरनाथ जी ने अपने पिता की आज्ञा याद रखी।

दुनिया में सबसे अच्छी संगत क्या है? वह संगत, जिसमें देवात्मा के देव प्रभाव प्राप्त हों। घर की संगत और बाहर की संगत हानिकारक है। मनुष्य संगत के बिना नहीं रह सकता। जितना हो सके अच्छी से अच्छी संगत करो। गुरु महाराज की पुस्तकें, बहुत अच्छी संगत है। यदि देवात्मा की पैदा की संगत में जाया जाए, तो नीच परिवर्तन नज़र आना शुरू हो जावेगा।

5.10.2008, 9.00 बजे सुबह

सभापति :- श्रीमान बलदेव सिंह जी

जिस दुनिया में हम रहते हैं, उसे नेचर वा विश्व कहते हैं। विश्व को विश्व की शक्तियां चलाती हैं। विश्व वा नेचर में नियमों का राज है। नेचर के नियम अटल हैं। एक नियम है, जो हमें संवारता है या बिगड़ता है। वह परिवर्तन का नियम

है। वातावरण परिवर्तन पैदा करता है। वातावरण क्या होता है? हवा, पानी, रोशनी, गर्मी, सर्दी के असर भौतिक वातावरण है। वातावरण में महत्त्वपूर्ण चीज़ प्रभाव हैं। मानसिक वातावरण में दिमाग उन्नत करने के असर होते हैं, जो स्कूलों, कालेजों, यूनिवर्सिटियों में होते हैं। बुद्धिशक्ति का वातावरण मानसिक वातावरण होता है। नीच संगत का वातावरण सामाजिक दूषित वातावरण होता है, सामाजिक वातावरण चुपचाप प्रभावित करता रहता है, बड़े ज़ोरदार ढंग से प्रभावित करता रहता है। सोच-विचार, हमारी कदरों कीमतों को प्रभावित करता है। जिस वातावरण में हम रह रहे हैं, उसके कितने हानिकारक फल हैं, इनका हमें कुछ पता नहीं लगता। हमारे उच्च बोधों की हानि होती रहती है, उच्च घृणा घटती रहती है। उच्च संगत की ज़रूरत का बोध घटता जाता है।

श्रीमान मुंशी राम जी ने यह लिखकर संगत रखने से मना कर दिया था कि अभी यहां संगत नहीं हो सकती। परन्तु श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के पहुंचने से वातावरण बदल गया। वह श्रीमान जी से प्रभावित होकर जगह-जगह उनके साथ ही जाने के लिए मजबूर हो गए। विकासार्थी बन गए और फिर कर्मचारी बन गए। उस मनुष्य के सौभाग्य हैं, जो वातावरण की पहचान कर ले। देव धर्म सत्संग उच्च वातावरण है, जिस में संकल्प और फैसले बदल जाते हैं। कोयलों जैसे जीवन हीरों जैसे बन जाते हैं।

श्री अकबरपुर :- 5 अक्तूबर को यह धर्म सम्बन्धी और श्रीमान नरेन्द्र जी चौधरी समेत 12.00 बजे लखनऊ से रवाना होकर 3.00 बजे श्री अकबर पहुंच गए। हवेली के आगे खड़े होकर जूते उतारकर, ज़मीन पर सिर रखकर प्रणाम किया। फिर हवेली के अन्दर जाकर, जन्म स्थान पर गुरु महाराज की फोटो के आगे फूलों के हार रखकर प्रणाम का साधन किया। स्टैचू (गुरु महाराज की मूर्ति) के आगे प्रणाम करने का साधन किया। ऊपर छत पर जाकर, उस कमरे के दर्शन किए, जहां सत्गुरु ने कबूतर पाले हुए थे, वहां बार-बार ज़मीन पर सिर रखकर यात्री श्रद्धा विभोर होकर प्रणाम करते रहे। 6.00 बजे शाम को सभा रखी गई। श्री चौहान साहिब ने बहुत ज़ोरदार भावों से भरकर यात्रियों का स्वागत किया, फिर सभा शुरू हुई। यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई।

देव स्तोत्र के गान और व्याख्या के बाद ज़ोरदार भावों से पूजनीय भगवान के चरणों में आशीर्वाद प्रार्थना की । सभा में बताया गया कि हमारा देश, विदेशों में धर्म-मत वा धर्म गुरु निर्यात करता है। परन्तु धर्म का किसी को पता नहीं। पूजनीय भगवान के जन्म से पहले धर्म तो बहुत थे, परन्तु सच्चे धर्म का किसी को पता नहीं था और न हो सकता था। देव शक्तियां जो देवात्मा को नेचर के विकास क्रम में प्राप्त हुई, वह किसी में नहीं थी, उनकी अवर्तमानता में किसी को आत्मा का ज्ञान नहीं हो सकता था न सच्चे धर्म का ज्ञान हो सकता था। केवल कल्पित ईश्वर को परम सम्बन्धी जानकर, दूसरे सच्चे सम्बन्धियों को बन्धन समझा जाता था। देवात्मा ने अपनी देव ज्योति में आत्मा का और धर्म का सच्चा ज्ञान दिया है। उन्होंने सम्बन्धों में

उच्च व्यवहारों को धर्म बताया है। सुन्दर दृष्टांतों के द्वारा यह सचाई बताई गई। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इस विषय में कुछ और सुन्दर जानकारी दी, इससे सभा और भी प्रभावशाली बन गई।

6.10.2008, सुबह 8.30 बजे :-

सभापति - श्रीमान बलदेव सिंह जी

भजन :- "शरण तुमरी न आता मैं, तो क्या होता कहां होता।" यदि तुममें से कोई धर्म कमाना चाहता है, तो तुम्हें कौन रोकता है? देवात्मा की शरण में आने से ही धर्म नहीं मिलता अच्छे बनने का नाम धर्म है। अच्छा कैसे बनोगे? बुरे व्यवहारों से बुरा बनते हैं। हमारे व्यवहार हमारी परिचालक शक्तियों से ही पैदा होते हैं। सबसे पहले सबसे ज़रूरी भाव श्रद्धा का भाव है। श्रद्धा क्या होती है? श्रद्धा भाव धर्म का मूल है। मदर टैरेसा विशुद्ध परोपकार की मूर्ति थी। जिसे शुद्ध परोपकारी नज़र आता हो, उसका त्याग नज़र आता हो, उसको महान देखता हो, अपने आपको उससे घटिया वा तुच्छ देखता हो, श्रद्धा भाव की निशानी है। गुरु मिशन में कुछ भेंट करना, सेवाकारी बनना श्रद्धा की निशानी है। विशुद्ध परोपकारी थोड़ी मात्रा में होते हैं। श्रद्धाभाव कैसे बढ़ेगा? श्रद्धा भाजन के कारज के लिए समर्पण वा त्याग करना पड़ेगा। श्रद्धा गुण चिन्तन करने और महान व्यक्तियों को महान देखने से बढ़ती है। उदाहरण सामने होने चाहिएं। फादर डैमीयन, फलोरेंस नाईटिंगेल, लिंकन, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, "जितने महान जीवन हैं, मेरी तसवी के दानें हैं, मैं उनको देख लेता हूँ, इबादत हो ही जाती है।"

धर्म प्राप्ति के लिए पर हित भाव पैदा करना आवश्यक है। सन्मान करने से श्रद्धा बढ़ती है। बुराई करने से श्रद्धा का नाश होता है। श्रद्धा द्वारा अपनी गल्ती देखनी पड़ती है। अपनी प्रशंसा करने से श्रद्धा घटती है।

शाम 5.00 बजे, सभापति :- श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

नेचर में प्रभावों का काम जारी है। प्रत्येक इन्सान अपनी प्रकृति के अनुसार प्रभाव छोड़ता है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा लासानी देव प्रभावों के दाता हैं। अधिकारी आत्माओं को अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार देव प्रभाव मिलते हैं। देवात्मा सत्गुरू की पैदा की हुई संगत में अनेक बार देव प्रभावों का वातावरण पैदा होता है। डाक्टर श्री राम जी को जब 60 वर्ष की उमर में देव प्रभाव मिले तो अपना वास्तविक रूप नज़र आया। माता के ईलाज में गल्त व्यवहार, गुरु भेंट में खोट, पारिवारिक सम्बन्धों में नीच भावों से पैदा हुआ नरक नज़र आया। देव प्रभावों ने उनके व उनके परिवार के भीतर आश्चर्यजनक परिवर्तन पैदा कर दिया। अपमानकारी बेटा बहुत शुक्रगुज़ार वा सेवाकारी बन गया। वह बहुत बड़े दानी बन गए। अपना जीवन परोपकार में लगाकर सफल किया। अपने बेटे को भी परोपकार के लिए उत्साहित किया। बहुत से और क्रिश्मों का ज़िकर किया गया। थानेदार ने कैसे दुखी दिल से पैसों का परिशोध किया। श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी की हृदयस्पर्शीय ईमानदारी की घटना का ब्यान किया गया। उनके पिता को देव प्रभावों में बैठकर, अपनी गलती का एहसास हुआ।

महोत्सव पर अपने गुनाहों के लिए बेटे के पैरों में पगड़ी रखकर क्षमा मांगी। कई और घटनाएं पेश की। हाज़रीन बहुत प्रभावित हुए।

7.10.2008, सुबह 8.30 बजे।

सभापति :– श्रीमान बलदेव सिंह जी

भजन :– (1) हमारा गुरु जो कि देवात्मा है, जहां भर में सच्चा वही देवता है।

(2) मुझको मेरा बोध कराओ।

मनुष्य बहुत जल्दी अपने आपको बहुत समझदार वा ज्ञानी समझने लगता है। परन्तु यह, हकीकत नहीं है। देव धर्म को समझना और समझकर उससे जुड़ना बहुत बड़े सौभाग्य की बात है। ईश्वरवादी धर्म मतों में अधिकतर ईश्वर उपासना करके ईश्वर को खुश करने पर ज़ोर दिया जाता है। भगवान देवात्मा के देव धर्म की विशेषता क्यों है? संसार में घर-घर में दुखों की भरमार है। बुद्ध फरमाते हैं कि ख्वाहिशें दुखों का घर हैं। ख्वाहिशों को मारो। भगवान देवात्मा ने देखा कि मनुष्य ईश्वर का नाम ले रहा है, परन्तु उसके आत्मिक रोग बढ़ रहे हैं। ईश्वर उनको नहीं रोक रहा। आदमी सुख को धारण करता है, सुख अनुरागी है। इसीलिए पाप वा झूठ-परायण है। कोई मनुष्य ऐसा नहीं कि जो पापी न हो। सारा मानव जगत आत्मिक रोगी है। विवेकानन्द जी कहते हैं कि मनुष्य Flame of Divinity है, जबकि मनुष्य सुख अनुरागी होकर तरह-तरह के पाप करता है। रोग का नतीजा, दुर्बलता, पीड़ा, कुत्सितपन वा विनाश है। मैं अपने आपको अच्छा समझता था और यह सोचकर समाज में आया था कि मैं कुछ समाज की सेवा करूंगा, परन्तु यहां आकर अपना वास्तविक रोगी रूप नज़र आया।

सुख की लालसा बढ़कर रोग का रूप धारण कर लेती है। चाहे वह स्वाद सुख हो, चाहे धन का सुख हो, चाहे कोई और सुख। मुझे मेरा अहं, मेरा उल्टा दृष्टा रूप, मिथ्याचारी, मेरी कामवासना, खड़मस्तीयां, बदमस्तीयां, अश्लीलताएं, नीचताएं दिखाई! धन सम्पति, लोभ, लालच और स्वार्थ दिखाया, उनकी कैद दिखाई। सत्गुरु ने मेरी करतूतें दिखाई। चण्डीगढ़ फारम पर एक गरीब बकरीवाले पर हाथ उठाया, सोटियों से मारा। घमंड, स्वार्थ, मनमुखता, नीच घृणा सब अहं के लक्ष्ण हैं।

भाव प्रकाश

श्रीमान किशन सिंह जी चौहान :– दिल के गहरे भावों से भरकर यात्रियों का धन्यवाद किया। सभाओं से प्रभावित होकर ज़ोरदार शब्दों में सभाओं की प्रशंसा की। इस बात से पछता रहे थे कि 5-6 पढ़े लिखे जन जो सभाओं से लाभ उठा सकते थे, उनके परिचित थे उन्हें वह बुला नहीं सके। यदि मेरी प्रशंसा की जाती है तो मैं शर्मिंदा महसूस करता हूँ। उन्होंने कहा कि मैं बेशक स्वास्थ्य के विषय पर किताब छपवा रहा हूँ, पर कुछ नियम मैं भी भंग करता हूँ। मुझे महसूस हुआ है कि मुझे कम खाना चाहिए। कुछ और भी कमियां नज़र आई हैं। धर्म सम्बन्धियों का बार-बार ऋणी अनुभव करता हूँ। मैं कोशिश करूंगा कि जहां ऐसा सत्संग हो वहां 2-4 बार जाकर लाभ उठाऊं।

एक और यात्री ने अलग होकर बताया कि मुझे इस सत्संग से लाभ हुआ है, इस पवित्र स्थान

की अमली तौर पर कुछ सेवा करना चाहता हूँ। यहां गेट बनाकर जाने का मन करता है, इसके लिए अच्छी रक्म दान में दूंगा। मैं हर महीने 500 रु० गुरु मिशन के लिए दान दूंगा मैं अपने दादा जी, दादी जी, श्रद्धेय पिता जी आदि पूर्वजों के निमित कुछ न कुछ दान मुकरर करूंगा। हर साल देना चाहता हूँ। गुरु मिशन के लिए कील कांटा बनने की सच्ची इच्छा जाग्रत हुई है। अपनी नीचता भी नज़र आई है। मैं अपने छोटे भाईयों पर बौखला कर हाथ उठाता रहा हूँ, उसका मुझे दुख है, यहां से जाकर दोनों भाईयों से हाथ जोड़कर क्षमा मांगूगा। मैं ज़्यादा संगत में आकर लाभ उठाऊंगा।

सन्मान के योग्य श्रीमान चौहान जी,

सत्य देव की जय।

मैं श्रीमान बलदेव सिंह जी का आभारी हूँ हमें हमारी गुरु महाराज जी की जन्म भूमि के दर्शन कराने के लिये प्रेरित किया और अपने साथ दर्शनों के लिये ले आये। गुरु महाराज की पावन जन्म भूमि के दर्शन करके मन को बहुत प्रसन्नता मिली, धन्य - धन्य हो गया।

यहाँ पर श्रीमान किशन सिंह जी को मिलकर मन खुश हुआ। यहाँ पर रह कर जो गुरु मिशन का कार्य कर रहे हैं, स्कूल को बहुत ही परिश्रम से चला रहे हैं, बच्चों में गुरु महाराज की शिक्षा का प्रसार कर रहे है, सब देखकर इनके चरणों में झुकता हूँ। हमारी समाज को ऐसे ही कार्यकर्त्ता की ज़रूरत है। काश! हम भी कुछ कील कांटा बन सकें। यहाँ पर सभाओं से भी बहुत लाभ हुआ है। मैं पिता जी के आगे नतमस्तक होता हूँ। जिन्होंने ऐसे गुरु महाराज के साथ जोड़कर धर्म जीवन में जीने की राह बताई। गुरु महाराज की कृपा से हमारे घर में सम्बन्धों में बहुत मेल है, घर में स्वर्ग की न्याई माहौल है। बच्चे अच्छे हैं, आज्ञाकारी हैं। सब गुरु की कृपा है। एक बार फिर गुरु महाराज को धन्यवाद देता हूँ, यहाँ तीन दिन रह कर सेवाऐं पाई हैं, उनके लिए भी चौहान जी व उनके सहयोगियों का बहुत - बहुत धन्यवाद। पार्टी ने लंगर वा जन्म स्थान की सेवा के लिए 8,500 रू० देकर खुशी अनुभव की। लगभग सब यात्रियों ने 1000 - 1000 या 500 - 500 रूपये दिए। बार - बार जय ध्वनि करके सत्संग समाप्त हुआ।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

पूजनीय भगवान फरमाते हैं :-

एक स्त्री की ओर संकेत करके भगवान देवात्मा ने फरमाया - दुर्भाग्य से स्त्रियों में ईर्षा, द्वेष और नीच घृणा की शक्तियां बहुत प्रबल रूप में आई हैं। यह प्रकृति शेर और भेड़िए की सी महा नीच प्रकृति है, जो औरों को फाड़ खाना चाहती है। नीच घृणा एक बहुत बड़ा हानिकारक आत्मिक रोग है। जैसे विष शरीर के नाना अंगों को नाश करने का काम करता है, उसी प्रकार यह नीच घृणा का भाव आत्मा के अंगों का नाश करता है। आत्मा तक देव प्रभावों के पहुँचने के सब रास्ते बंद कर देता है। इसलिए मनुष्य के लिए किसी भी अस्तित्व को घृणा करना उचित नहीं है। यदि कोई जन किसी को घृणा करता हो या उसके साथ कोई अनुचित सलूक करता हो, तो उसके लिए वह जिम्मेवार है, तुम उसे घृणा करके अपने आत्मा का नाश काहे को करो। जैसे एक-एक मां अपने बच्चे से दुःख पाकर भी उसे परे नहीं फैंकती, वरना बच्चे की पालना कैसे हो, वैसे ही तुम में भी औरों के संबंध में यही भाव क्यों न आना चाहिए? स्त्रियों में स्वार्थपरता बहुत अधिक बढ़ी हुई है, इसलिए वह अपने ही बच्चे से संबंध बोध करती हैं। वरना सच्ची हमदर्दी, स्नेह वा प्यार आदि के उच्च भाव स्त्री जाति में अधिक मात्रा में होने चाहिए। किसी गिरे हुए को उठाना, एक-एक पतित जन को बेहतर करना, दुखिया की सहायता करना, आत्मा की उच्च अवस्था का प्रमाण है। एक दूसरे को घृणा करने में कौन सी खूबी की बात है? ऐसा करके दोनों का आत्मिक पतन होता है। इसलिए दो स्त्रियों का कहीं मिलकर रहना बहुत कठिन हो रहा है। वह एक दूसरे की ज़रा-ज़रा सी बात को भी बरदाशत नहीं कर सकतीं। उनमें झट लड़ाई शुरू हो जाती है। यद्यपि मनुष्य को पैदा हुए लाखों वर्ष हो चुके हैं, तथापि मनुष्य के भीतर बहुत कुछ भेड़िए और शेर जैसी फाड़ खाने वाली हिंसक प्रकृति भरी पड़ी है, जो कटने में नहीं आती। यह आपस के झगड़े फिसाद होते इसलिए हैं कि मनुष्य के भीतर राक्षसी भाव भरे पड़े हैं। यदि यह नष्ट हो जावें, तो कोई लड़ाई झगड़ा न हो। इसलिए तुम्हें धैर्य और हिम्मत के साथ लगातार निज के साधनों के द्वारा देव प्रभावों के पाने और भीतर के राक्षसों को काटने वा नष्ट करने की आवश्यकता है, ताकि तुम्हारे आत्मिक कल्याण का मार्ग अधिक से अधिक खुल सके।

नीच घृणा का भाव महा विनाशकारी है और मनुष्य के दिल को जला देने वाला है। दिल का जलना, सड़ना और कुढ़ना क्या है? यही कि दिल में नीच घृणा वर्तमान है जो औरों से फाड़ने का काम करती है। आजकल हिन्दुओं और मुसलमानों में जो फिसाद हो रहा है? उसकी तह में और क्या बात है? यही नीच घृणा शक्ति कि जो कुश्तो खून करा रही है, आपस में लड़ाई झगड़ा और मार पिटाई करा रही है। क्या झांगी राम के जीवन में यह नीच घृणा का ही प्रकाश नहीं कि किसी बात पर नाराज़ होकर उसने अपने दामाद से बरसों तक बात भी नहीं की? उसने उनका क्या बिगाड़ा था? हमारे लिए उसका दिल इतना घृणा भाव से भरा हुआ है कि उसे हमारी शक्ल तक देखना और हमें मामूली सम्मान देना भी गवारा नहीं। क्या कोई नेक जन यह गवारा कर सकता है कि उसके माता पिता यदि उसके पास से गुज़रें, तो वह उनकी तरफ से पीठ मोड़ लें और मामूली सम्मान भी प्रकाश न करे। हमारे ख्याल में वह और उसके माता पिता कभी यह गवारा नहीं करेंगे, फिर गुरु के संबंध में तो यह नीच घृणा कैसी विनाशकारी है। यह आत्मा का कुछ भी बाकी नहीं रहने देती। किसी की किसी खूबी को देखने नहीं देती और न ही उसका औरों के पास प्रकाश करने देती है। खूबी को देखने के लिए रोशनी चाहिए और उसका प्रकाश करने के लिए भाव चाहिए, यह दोनों चीजें ही नीच घृणा का भाव पैदा होने नहीं देता।

WPP - Regd. Postal No.Pb (0078) 2006 **Published on 5th of the month**
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

महोत्सव के कार्यक्रम

परम पूजनीय भगवान देवात्मा संस्थापक देवधर्म का 158 वां वार्षिक शुभ जन्म महोत्सव धर्मशाला 18 डी चण्डीगढ़ में 11 दिसम्बर, 2008 से 14 दिसम्बर, 2008 तक मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर पहुंच कर अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

महोत्सव के कार्यक्रम

वीरवार 11 दिसम्बर, 2008

प्रवेश सभा 4.00 बजे सायं

शुक्रवार 12 दिसम्बर 2008

1. **पहली सभा 8.30 बजे प्रातः**

विषय : परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बंध

2. **पब्लिक लैक्चर 4.00 बजे**

वक्ता – प्रिंसीपल मिसिज सुरजीत बराड़

शनिवार 13 दिसम्बर 2008
(महोत्सव का विशेष दिन)

सूर्य निकलने के समय जो कि आत्मिक जगत के सूर्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा के शुभ जन्म का समय है, बैंड, बाजा, कीर्तन, शुभकामनाएं और जय ध्वनि - 6.30 बजे प्रातः

1. **पहली सभा 8.30 बजे प्रातः**

विषय : भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बंध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता, धन और जन की अपील।

2. **दूसरी सभा 1.30 बजे दोपहर,**

विषय : बच्चों की सभा और संगीत सभा।

3. **पब्लिक लैक्चर 4.00 बजे सायं,**

वक्ता – डॉ. विनोद खेड़ा।

4. दीप माला 6.00 बजे सायं
5. आलोचना सम्बन्धी सुझाव
(लिखकर दे सकते हैं)

रविवार 14 दिसम्बर, 2008

1. **पहली सभा 8.00 बजे प्रातः**

विषय : सेवक, सेवकाओं का ग्रहण, श्रेणियों में उन्नति तथा पारिवारिक अनुष्ठान

2. भाव प्रकाश
3. देव आरती का गान और जय ध्वनि

नोट : 1. कृपया सेवक सेवका अपनी एकाकारियों के साथ शामिल हों।

2. आवश्यकता पड़ने पर किसी कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है।
3. यात्रीगण कृपया अपने बिस्तरे अवश्य साथ लाएं।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160022*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts